RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

डॉ0 श्याम सिंह शशि के बालकाव्य में राष्ट्रीय चेतना : एक अध्ययन

[1]प्रो0 दिनेश चंद्र चमोला ; [2]दीपक प्रसाद रतूड़ी

[1]विभागाध्यक्ष, भाषा एवं आधुनिक ज्ञान विज्ञान, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, बहादराबाद
[2]शोध छात्र, भाषा एवं आधुनिक ज्ञान विज्ञान, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, बहादराबाद

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
राष्ट्रीय, बालवीर, बाल कविता, देशभक्ति।

ABSTRACT

वर्तमान समय में कवियों ने कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की भावना संचारित की है। डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताओं द्वारा भी राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए अभूतपूर्व योगदान दिया गया है। उन्होंने विभिन्न आयुवर्ग के बालक–बालिकाओं को ऐसा राष्ट्रीय स्तर का साहित्य प्रदान किया जो उन्हें राष्ट्रीय चेतना, व्यक्तित्व निर्माण, राष्ट्रप्रेम व सामाजिक सहिष्णुता से ओत–प्रोत करे। राष्ट्रीय चेतना डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताओं का मूल है जिसमे उन्होंने अपने देश की उपलब्धियों तथा भावी सम्भावनाओं का वर्णन किया है। इनकी देशभक्ति व राष्ट्रीय चेतना की कविताओं ने जनजीवन में देशप्रेम की भावना भरने का सुन्दर प्रयास किया है। डॉ0 श्याम सिंह शशि के बाल काव्य में कविताओं पर दृष्टिपात करने से यह परिलक्षित होता है कि उनकी ये कविताएं बालकों में राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने हेतु एक मील का पत्थर है। डॉ0 श्याम सिंह शशि ने 'नन्हे सैनिक' नामक बालगीतों के माध्यम से बच्चों में राष्ट्रीय चेतना भरी है। डॉ0 शशि की कविताएं बच्चों को बालवीर व नन्हें सैनिक के रूप में देखती हैं। राष्ट्रीय चेतना की भावनाओं से ओत–प्रोत अपनी बाल कविताओं के माध्यम से डॉ0 शशि ने बच्चों को राष्ट्रप्रेम व देशभक्ति का पाठ पढ़ाया है।

भारत विश्व की सर्वाधिक संस्कृतियों का संवाहक देश रहा है। विश्व की सभी संस्कृतियाँ किसी न किसी रूप से भारत के अतीत व वर्तमान से जुड़ी रही हैं जिनका उल्लेख प्राचीन काल के उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। अर्थात् विश्व की सांस्कृतिक धरोहरों का मुख्य संवाहक भारतीय साहित्य है। भारत के अतीत में झांकने पर स्पष्ट दिखलायी पड़ता है कि भारतीय साहित्य ने भारत की ही नहीं अपितु विश्व के एक बड़े क्षेत्र की राष्ट्रीय चेतना को संजो कर आने वाली पीढ़ियों को हस्तान्तरित किया है। बहुत से दार्शनिकों, कवियों व लेखकों द्वारा राष्ट्रीय चेतना के विषय में जो कुछ लिखा गया है अथवा कहा गया है वह प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होता रहा है।

राष्ट्रीय चेतना एक ऐसा विषय रहा है जिसका गान प्राचीन काल से ही भारतीय राजाओं–महाराजाओं के दरबारी कवियों द्वारा किया गया है। इन दरबारी कवियों द्वारा राष्ट्रीय चेतना से सम्बन्धित कविताओं व गीतों को युद्ध के समय बडे ही आक्रामक रूप से प्रस्तुत किया जाता था जिसके फलस्वरूप राजा व सैनिकों में राष्ट्रीय चेतना का संचार इस प्रकार होता था कि वे राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तत्पर हो जाते थे। इन कवियों के द्वारा बहुत सी पुस्तके लिखी गयी जो आज भी पढ़ने के लिए मिलती हैं। कुछ काव्यगान प्राचीन काल से वर्तमान तक गीतों व कहावतों के माध्यम से नई पीढ़ी तक पहुँचते रहे हैं।

वर्तमान समय में भी कवियों ने कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की भावना संचारित की है और पुरातन काल से चली आ रही परम्परा का निर्वहन किया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रताप नारायण मिश्र, डॉ0 जगमोहन सिंह व श्रीधर पाठक आदि कवियों ने राष्ट्रीय चेतना, देशभक्ति व राष्ट्रप्रेम का जो बिगुल अपनी कविताओं के माध्यम से बजाया था उसमें नवीन स्वर डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताओं ने अनुप्राणित किये हैं।

डॉ0 श्याम सिंह शशि का व्यक्तित्व बहुत ही कोमल, शीतलता से ओत–प्रोत एवं सहज है। उन्होंने अपनी कविताओं में अपनी इस कोमलता और शीतलता को प्रदर्शित किया है। बाल काव्य की परम्परा में उनका नाम अग्रणी साहित्यकारों में लिया जाता है क्योंकि उन्होंने बाल साहित्य में उन अछूते विषयों पर लिखा है जिनपर लिखना बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहा है। बच्चों के लिए काव्य सृजन करते हुए अछूते विषयों में डूबकर और स्वयं बच्चों की तरह महसूस करके उन्होंने अपनी लेखनी को चलाया है। यायावर कवि डॉ0 शशि के बाल काव्य को दृष्टिपात करते हुए ऐसा अनुभव होता है कि उन्होंने बालकों के स्तर पर उतर कर विभिन्न आयुवर्ग के बालक–बालिकाओं को ऐसा राष्ट्रीय स्तर का साहित्य प्रदान किया जो उन्हें राष्ट्रीय चेतना, व्यक्तित्व निर्माण, राष्ट्रप्रेम व सामाजिक सहिष्णुता से ओत–प्रोत करे।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

राष्ट्रीय चेतना डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताओं का मूल है जिसमे उन्होंने अपने देश की उपलब्धियों तथा भावी सम्भावनाओं का वर्णन किया है। इनकी देशभक्ति व राष्ट्रीय चेतना की कविताओं ने जनजीवन में देशप्रेम की भावना भरने का सुन्दर प्रयास किया है। स्वदेश प्रेम की ओजस्वी भावना से परिपूर्ण होने के कारण डॉ0 शशि के काव्य में जनमानस को उस समय देश प्रेम के लिए जागृत किया जब समस्त विश्व द्वितीय विश्वयुद्ध की आग में झुलस रहा था। **डॉ0 चन्द्रिका प्रसाद शर्मा** ने डॉ0 शशि के विषय में लिखते हुए कहा है, **''कवि शशि राष्ट्रीय भाव धारा के कवि हैं। उन्होंने फैशन के लिए राष्ट्रीय कविताएं नहीं लिखी। उनको अपने देश की महत्ता पर गर्व है।''**

डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताएं देश पर बलिदान होने की भावना से परिपूर्ण हैं। कवि ने जन साधारण में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार करने के लिए ऐसे श्रृंगारित शब्दों का प्रयोग अपनी लेखनी से किया है कि राष्ट्रीय चेतना की धरा में समस्त भारतवासी प्रवाहित होते चले गये। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना के संकल्प व शौर्य को पाठकों तक पहुँचाया है। उनकी राष्ट्र प्रेम से भरी कविताओं ने राष्ट्र की आत्मा को एक नवीन चेतना प्रदान की है। **डॉ0 मीना यादव** ने डॉ0 शशि के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का वर्णन करते हुए कहा है, **''डॉ0 शशि की काव्य चेतना सम्बन्धी चर्चाएं अधूरी ही प्रतीत होगी यदि उनकी कविताओं में विद्यमान उनकी गहरी आत्मीय राष्ट्रीय चेतना को सम्मिलित नहीं किया जाए''।**

डॉ0 श्याम सिंह शशि के बाल काव्य में कविताओं पर दृष्टिपात करने से यह परिलक्षित होता है कि उनकी ये कविताएं बालकों में राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने हेतु एक मील का पत्थर है। डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताएं बच्चों के लिए प्रेरणास्रोत का कार्य करती हैं तथा उनके राष्ट्रीय व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। उनके शब्दों में :–

ये गीत जब वे गुनगुनायेंगे
शौर्य, साहस से भर जायेंगे
बाल वर्ष के 'बालवीर' कहलायेंगे
(बालवर्ष का उपहार, नन्हें सैनिक)

बच्चों को मार्गदर्शित करते हुए वे उन्हें आत्मनिर्भर, स्वतन्त्र और उत्कृष्ट कार्य करने की ओर अग्रसर करते हैं, जब वे लिखते हैं :–

हम सब विद्यालय जायेंगे, हम सब देश के काम आयेंगे।
(बालवर्ष में, नन्हें सैनिक, 9)

डॉ0 श्याम सिंह शशि ने 'लहू के फूल' तथा 'नन्हे सैनिक' नामक बालगीतों के माध्यम से युवाओं और बच्चों में राष्ट्रीय चेतना, उत्साह व स्फूर्ति भरी है। युवाओं के साथ–साथ कवि शशि अपनी कविताओं से बच्चों को भी उत्साहित करते हैं। निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है :–

राइफल लेकर आज चलूँगा/मैं भी डैडी के संग–संग
नहीं डरूँगा खूब लडूँगा/दुश्मन के काटू हर अंग
(राइफल, नन्हें सैनिक, 19)

'नन्हें सैनिक' में उनकी कविता 'उडने को' की पंक्तियाँ पढ़कर कोई भी बालक राष्ट्र के प्रति अपने आप को समर्पित करने को तैयार हो जाएगा। डॉ0 शशि के व्यक्तित्व में निहित एक नन्हा जवान उनकी कविताओं को वाणी देते हुए कहता है :–

मेरी धरती पर गर कोई/तिरछी आँख उठायेगा
मेरा अंग–अंग लड़ने को/पल भर में तन जायेगा
(उड़ने को, नन्हें सैनिक, 13)

डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताएं स्वदेश को सर्वोपरि व वन्दनीय मानती हैं। उनकी कविताएं बच्चों में जोश व उत्साह का संचार कर उनमें राष्ट्रीय चेतना का विकास करने का कार्य करती हैं। डॉ0 शशि की कविताएं बच्चों में इतना उत्साह भर देती हैं कि बच्चे सैनिक बनकर देशरक्षा हेतु तत्पर हो जाते हैं :–

छूक–छुक गाडी नहीं माँगती/मुझे एक बन्दूक दिला दो
मम्मी, सब कुछ मिल जायेगा/सेना में भरती करवा दो
(बन्दूक, नन्हें सैनिक, 10)

डॉ0 शशि की कविताएं बच्चों को बालवीर व नन्हें सैनिक के रूप में देखती हैं। राष्ट्रीय चेतना की भावनाओं से ओत–प्रोत अपनी बाल कविताओं के माध्यम से डॉ0 शशि ने बच्चों को राष्ट्रप्रेम व देशभक्ति का पाठ पढ़ाया है। डॉ0 शशि राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति अपने देश के प्रति बलिदान होने की भावना के माध्यम से करते हैं। उन्होंने अपनी कविता 'आजादी की खातिर' में बच्चों के हृदय में निहित राष्ट्रीय चेतना को निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत किया है :–

हम बच्चे हैं आज के/आजादी के राज के
आजादी में हुए बड़े/आजादी में हुए खड़े
इस आजादी की खातिर/जान हमें देना बेहतर
युग–युग तक आजाद रहे/भारत माँ आबाद रहे
(आजादी की खातिर, नन्हें सैनिक, 17)

उनकी राष्ट्रीय चेतना मात्र युद्धों व सैनिकों के अदम्य साहस व शौर्य तक ही सीमित नहीं है वरन् वे बच्चों के माध्यम से भारत के जन–जन तक प्रेम का स्वर व राग पहुँचाना चाहते हैं :–

हिल–मिल कर रहना सीखें/मिल–जुल बढ़ते जायेंगे।
अपने भारत के घर–घर में/भर–भर प्यार लुटायेंगे।।
(भर–भर प्यार, नन्हें सैनिक, 18)

राष्ट्रीय भावना का आविर्भाव राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम से होता है। यह ऐ ऐसी भावना है जिसका सम्बन्ध मनुष्य की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अन्तर्चेतना से होता है। जब व्यक्ति संकीर्ण एवं साम्प्रदायिक भावना से ऊपर उठकर समग्र राष्ट्र तक प्रसारित हो जाता है, तब राष्ट्रीय चेतना का जन्म होता है। इन सभी भावनाओं को जागृत व विकसित करने का सार्थक कार्य डॉ0 शशि की कविताएं कर रही हैं। डॉ0 शशि के काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यंजना के सभी रूप पाये जाते हैं। डॉ0 शशि की राष्ट्रीय चेतना में मानवतावादी विचारधारा के पुट दिखयी देते हैं। उन्होंने अपनी लेखनी की साधना से बच्चों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार कर उनमे आशातीत जागृति का श्री गणेश किया है।

उन्होंने देश के बच्चों को संगठित होकर देश पर बलिदान होने के लिए प्रेरित किया तथा उनके सम्मुख आत्मनिर्भरता, स्वतन्त्रता और स्वत्व प्राप्ति का मार्ग निर्दिष्ट किया है। डॉ0 श्याम सिंह शशि की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना विविध रूपों में प्रस्फुटित हुई है। उनकी कविताओं में अतीत का गौरवगान और वर्तमान परिस्थितियों का उद्घाटन हुआ है। उन्होंने देश के नवयुवकों व बच्चों को देशहित के लिए प्रोत्साहित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

यादव, एम0 (2000). *श्यामसिंह शशि का काव्य : चेतना और शिल्प.* सूर्यप्रभा प्रकाशन, नई दिल्ली, 121।

शर्मा, सी0पी0 (1992). *समकालीन शोध में शशि–काव्य.* शिलालेख, विश्वासनगर, दिल्ली।

शशि, एस0एस0 (1985). *नन्हें सैनिक.* किताबघर, मेन बाजार, गाँधी नगर, दिल्ली।

शशि, एस0एस0 (1985). *जीवन पथ पर.* भारतीश्री प्रकाशन, नई दिल्ली।

शशि, एस0एस0 (1985). *मेरे साक्षात्कार.* किताबघर, मेन बाजार, गाँधी नगर, दिल्ली।

शर्मा, सी0पी0 (2014). *एकला चलो रे.* शिलालेख, विश्वासनगर, दिल्ली।